सामी लोक कथा

चंद्रमा की बेटी और सूर्य का बेटा

चित्र: ई. बुलाटोव, ओ. वासिलिव

हिंदी: अरविन्द गुप्ता

पूरे लंबे दिन में सूर्य अपनी नाव जैसी स्लेज में बैठकर नीले आकाश पर सवारी करता है और अपनी दुनिया का सर्वेक्षण करता है. सुबह को भालू उसे खींचता है, दोपहर को नर बारासिंघा और शाम को मादा बारासिंघा. सूर्य को दिन के दौरान बहुत सी चीजें करनी होती हैं: उसे सभी जीवित चीज़ों को जीवन प्रदान करना होता है, सूर्य को पेड़ों, काई (मॉस) और घास को बढ़ने में मदद करनी होती है, उसे जानवरों, लोगों और पक्षियों को रोशनी देनी होती है ताकि वे जीवित रहें, मजबूत और मोटे बनें और सूर्य की संपत्ति में वृद्धि करें. लेकिन शाम तक सूरज थक जाता है और थककर समुद्र में डूब जाता है. अब उसकी केवल एक इच्छा आराम करने और सोने की होती है. लेकिन एक दिन उनके बेटे पेइवल्के-किरण ने उसे परेशान करना शुरू कर दिया.

“पिताजी, अब मेरी शादी का समय आ गया है.”

बेटे का कहना सच था - अब वाकई उसकी शादी का सही समय आ गया था.

"क्या तुमने अपने लिए कोई दुल्हन चुनी?"

"मुझे कोई नहीं मिली. मैंने पृथ्वी पर सभी लड़कियों पर अपने सुनहरे जूते आज़माए, और उन्हें कोई भी नहीं पहन सका. उनके पैर बहुत भारी हैं, वे ज़मीन नहीं छोड़ पाएंगी. लेकिन मुझे तो आसमान में ही रहना होगा.”

"तुमने गलत जगह पर खोज की है, पेइवल्के," सूर्य ने कहा. “मैं चंद्रमा से पूछूंगा. मैंने सुना है कि उसकी एक बेटी है. बेशक, चंद्रमा हमसे अधिक गरीब है, लेकिन हमारी तरह वो भी आकाश में ही रहती हैं."

सूरज ने उस दिन की प्रतीक्षा की जब चंद्रमा सुबह उगा, फिर वो उसके पास गया. "मुझे बताओ, पड़ोसी," उसने चंद्रमा से कहा, "क्या यह सच नहीं है कि आपकी एक गोरी बेटी है? मेरे पास उसके लिए एक संभावित वर है, मेरा बेटा पेइवल्के-किरण."

वो सुनकर मां चंद्रमा का चमकता हुआ चेहरा एकदम मंद पड़ गया.

“मेरी बच्ची अभी बहुत छोटी है. जब मैं उसे अपनी बाहों में उठाती हूं तो मुझे उसका वजन महसूस तक नहीं होता है. वो भला अभी शादी कैसे कर सकती है?”

"उससे कोई फर्क नहीं पड़ता है," सूर्य ने कहा. “मेरा घर समृद्ध है. हम उसे अच्छा खाना खिलाएंगे और फिर वो बड़ी हो जाएगी. आओ, मेरे बेटे पेइवल्के को उसे देखने दो.”

"अरे नहीं!" चंद्रमा भयभीत होकर चिल्लाई और उसने अपनी बच्ची को एक बादल से ढंक दिया. “तुम्हारा पेइवल्के मेरी बेटी को झुलसा देगा. देखो सच्चाई तो यह है कि मेरी बेटी की, पहले से ही नॉर्दर्न लाइट्स के नैना से मंगनी हो चुकी है. देखो वो वहां, समुद्र के ऊपर चल रहा है.”

"अच्छा, तो यह बात है?" सूरज ने गुस्से से कहा. “तो तुमने हमें रंग की एक घटिया रंगीन पट्टी के लिए ठुकरा दिया है? लगता है तुम भूल गई हो, पड़ोसी, कि मैं सभी चीज़ों को जीवन देता हूँ. मेरे पास धन है, मेरे पास शक्ति है!”

"तुम्हारी ताकत, पड़ोसी, सिर्फ आधी ताकत ही है." चंद्रमा ने कहा, “जब सांझ आती है, तब तुम कहां छिप जाते हो? और रात में? और पूरी लंबी सर्दी के दौरान - तब तुम्हारी ताकत कहां चली जाती है? लेकिन नैना की नॉर्दर्न लाइट्स सर्दियों में भी चमकती हैं, और रात में भी रोशनी देती हैं.”

इन शब्दों ने सूर्य को और भी क्रोधित कर दिया. उसने उग्र बाण फेंके, वो गुस्से से उबल पड़ा. “फिर भी,” वो दहाड़ा, “मैं अपने बेटे की शादी तुम्हारी बेटी से ही करूंगा!” फिर गड़गड़ाहट हुई, हवा गरजी, समुद्र में ऊंची-ऊंची लहरें उठीं और पहाड़ियां कांप उठीं. पृथ्वी पर सब कुछ हिलने लगा. हिरन एक-साथ एकत्र हो गए और लोग अपने ग्रीष्मकालीन आश्रय स्थल, यानि वेझा में जाकर छिप गए.

चांद जल्दी से रात के अंधेरे में जाकर छिप गया.

चांद ने सोचा, मुझे अपनी बच्ची को सूरज की बुरी नज़र से सुरक्षित रखना चाहिए. एक झील पर उसे एक तैरता हुआ द्वीप दिखाई दिया जहां एक बूढ़ा आदमी और उसकी पत्नी रहते थे. दोनों अच्छे, दयालु लोग थे. चांद ने सोचा, मैं अपनी बेटी को उन लोगों को सौंप सकती हूं.

कुछ समय बाद सूर्य अपनी हरकतों से थक गया. फिर गरजन शांत हुई और हवाएं थम गईं. बूढ़ा आदमी और उसकी पत्नी, भोजपत्र की छाल उतारने के लिए जंगल में गए थे. और वहाँ उन्होंने देवदार के पेड़ की एक शाखा से एक चांदी का पालना लटका हुआ देखा.

उसमें कोई नहीं था, फिर भी उन्हें एक बच्चे की आवाज़ सुनाई दी. "नीकिया - मैं यहाँ नहीं हूँ! और अब - मैं यहां हूं!

उन्होंने फिर देखा और पालने में एक बच्चा लेटा हुआ था, बिल्कुल एक सामान्य मानव बच्चे की तरह, सिवाय इसके कि वो चांदनी से चमक रहा था.

दोनों बूढ़े लोग पालने को अपने घर ले गए. वे एक बेटी पाकर बेहद खुश थे. उन्होंने उसकी देखभाल की और उसका पालन-पोषण किया. वो छोटी बच्ची बूढ़े को अपने पिता, और बूढ़ी औरत को अपनी मां की तरह मानती थी, लेकिन रात में वो अपना पालना छोड़ देती थी, और अपना चेहरा चंद्रमा की ओर उठाती थी, वो अपनी बाहों को उठाती थी और फिर और अधिक चमकती थी. धीरे-धीरे बच्ची ने हिरन की खाल के पर्दे और रजाई बनाना और उन पर मोतियों और चांदी से कढ़ाई करना सीखा. जब वो खेलना चाहती थी तो वो चिल्लाती थी, "नीकिया - मैं यहाँ नहीं हूं!" और फिर वो गायब हो जाती थी, लेकिन उसकी हंसी गूंजती रहती थी. इसलिए बूढ़े दंपत्ति उसे नीकिया बुलाने लगे.

नीकिया धीरे-धीरे बड़ी हुई. उसका चेहरा गोल और गुलाबी था, उसके बाल चांदी के धागों की तरह चमकते थे. वो पतली और चमकदार थी. समय के साथ वो अफवाह सूर्य तक पहुंची कि उस द्वीप पर एक बूढ़े दंपत्ति के साथ एक लड़की रहती थी जो मानव बेटियों से बिल्कुल अलग थी. सूर्य ने अपने बेटे पेइवल्के को उसके पास भेजा. पेइवल्के ने द्वीप के लिए उड़ान भरी, और वहां उसने बूढ़े दंपत्ति को देखा. उसने नीकिया को भी देखा और वो उससे प्यार कर बैठा.

"गोरी लड़की," पेइवल्के ने कहा, "ज़रा मेरे सुनहरे जूते पहन कर तो देखो."

नीकिया शरमा गई. उसने जूते खींचे और फिर वो चिल्लाई. "अरे, वे जूते कितने गर्म हैं, उन्होंने मेरे पैर ही जला दिए!"

"कोई बात नहीं," पेइवल्के ने आश्वस्त करते हुए कहा, "तुम्हें उनकी आदत हो जाएगी." वो नीकिया को अपनी बाहों में उठाकर ले जाना चाहता था, लेकिन वो ज़ोर चिल्लाई, "मैं यहां नहीं हूं, मैं यहां नहीं हूं, मैं चली गई हूं!" और फिर वो एक परछाई की तरह पिघलकर लुप्त हो गई. सुनहरे जूते दरवाज़े के पास पड़े रहे.

रात होने तक नीकिया जंगल की झाड़ियों में छिपी रही. लेकिन जब चंद्रमा आकाश में उग आया तो वो अपनी किरण के साथ जंगलों, पहाड़ों और टुंड्रा के पार चली गई. नीकिया की माँ चंद्रमा, उसे समुद्र के पास के खाली किनारे पर खड़े एक अकेले घर में ले गईं. नीकिया घर में दाखिल हुई, लेकिन उसे वहां कोई नहीं मिला. घर बहुत गंदा और अव्यवस्थित था, इसलिए नीकिया पानी की एक बाल्टी लेकर आई और उसने वहां पर सब कुछ धोया और साफ किया. जब उसने काम पूरा कर लिया तो उसे थकान महसूस हुई, इसलिए वो एक पुरानी धुरी में बदल गई, और उसने खुद को दीवार से चिपका लिया और फिर वो सो गई.

जब शाम ढली तो नीकिया ने भारी क़दमों की आवाज़ सुनी. फिर चांदी के कवच पहने योद्धाओं ने घर में प्रवेश किया, प्रत्येक योद्धा दूसरे योद्धा से अधिक शक्तिशाली और चमकदार था. वे सब उत्तरी लाइट के भाई थे जिनका नेतृत्व उनका सबसे बड़ा भाई, उनका नेता नैना कर रहा था.

''हमारा घर साफ-सुथरा है.'' नैना ने कहा, “हमारे घर में एक अच्छी गृहिणी अवश्य आई है. मुझे नहीं पता कि वह कहां छुपी है, लेकिन मैं उसकी आंखों की झलक महसूस कर सकता हूं.'

फिर भाई भोजन करने बैठे. जब उन्होंने खाना समाप्त किया तो फिर उन्होंने अपना खेल शुरू कर दिया, जो असल में एक नकली लड़ाई थी - कृपाणों से वार करना, एक-दूसरे को पकड़ना आदि. उनके हथियारों से सफेद आग निकली और उससे आसमान में लाल रंग की चमक नाचने लगी.

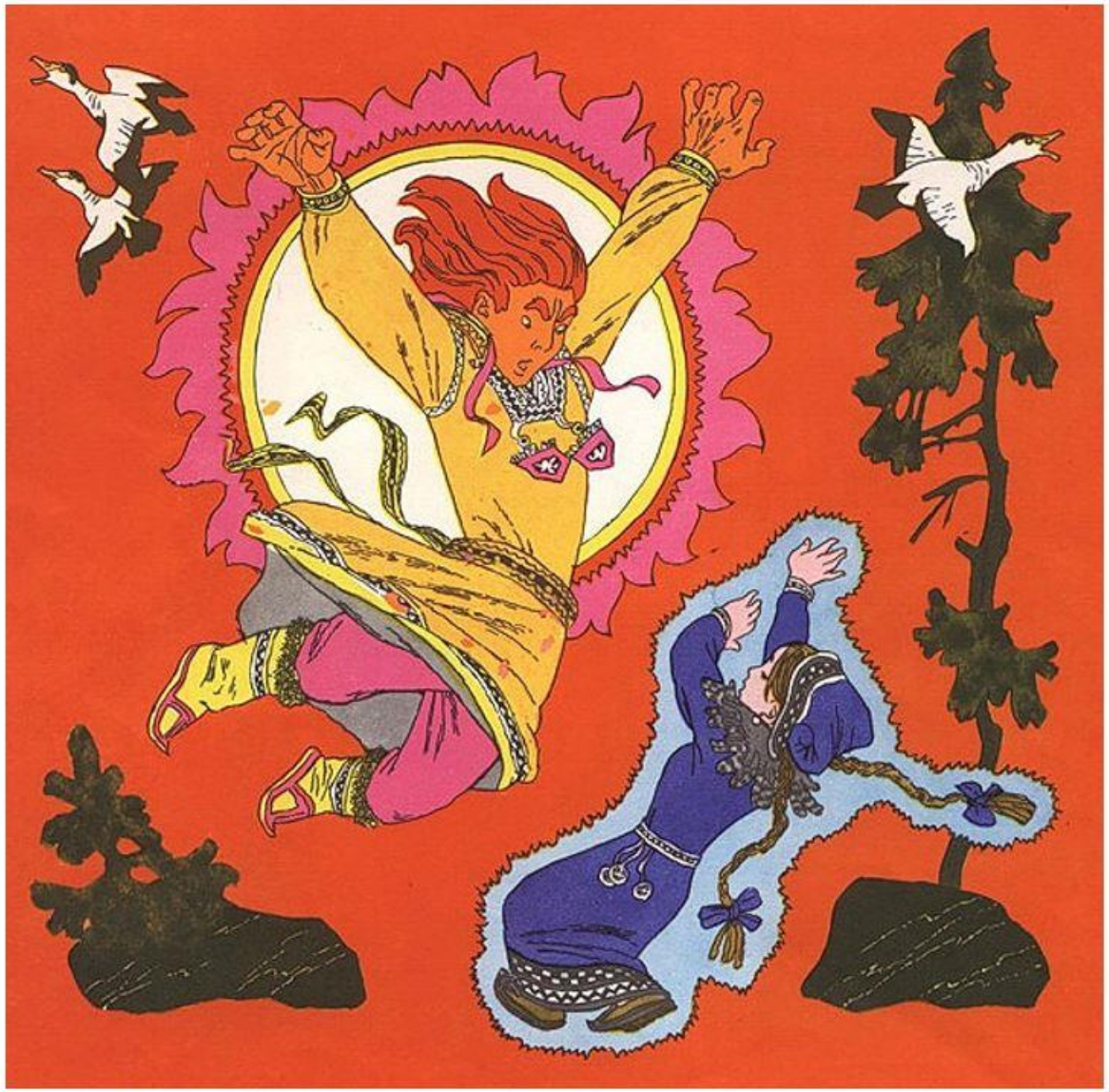

भाइयों ने आकाश के योद्धाओं के बारे में एक गीत गाया और फिर उसके बाद वे एक-एक करके उड़ गए. केवल नैना ही घर में बचा.

"खुद को दिखाओ, तुम जहां भी हो," उसने विनती की. "यदि तुम एक बूढ़ी औरत हो तो तुम मेरी मां बनोगी, यदि तुम मेरी उम्र की हो तो तुम मेरी बहन बनोगी, यदि तुम एक युवा लड़की हो तो मैं तुम्हें अपनी दुल्हन बनाऊंगा."

"मैं यहां हूं," नीकिया ने धीरे से कहा और भोर की मंद रोशनी में वो नैना के सामने आकर खड़ी हो गई.

"क्या तुम मेरी पत्नी बनोगी, नीकिया?" उसने पूछा.

"हां, नैना," नीकिया ने इतने धीरे से उत्तर दिया कि शायद वो उसे सुन नहीं सका.

परन्तु अब आकाश चमक उठा और सूर्य की धार दिखाई देने लगी.

"मेरे लिए रुको, नीकिया!" नैना चिल्लाया, और वो चला गया.

हर शाम नैना और उसके भाई अपने घर के लिए उड़ान भरते, हर शाम वे आकाश में अपना खेल खेलते और सूर्योदय के साथ उड़ जाते थे.

"यहां रुको, नैना," नीकिया ने विनती की. "सिर्फ एक दिन मेरे साथ यहां पर रहो."

"मैं वो नहीं कर सकता." नैना ने कहा, "क्योंकि समुद्र के ऊपर आसमान में लड़ाई मेरा इंतजार कर रही है."

तब नीकिया के दिमाग में विचार आया कि नैना को कैसे रोका जाए. उसने हिरन की खाल का एक पर्दा बनाया और उस पर चांदी की आकाशगंगा और बड़े सितारों की कढ़ाई की. फिर उसने उस पर्दे को घर में छत के नीचे लटका दिया.

जब रात हुई तो नैना अपने योद्धाओं के साथ घर की ओर उड़ गया. वे आकाश में खेलते रहे, अपना मनोरंजन करते रहे और फिर आराम करने के लिए लेट गए. नैना गहरी नींद में सोता रहा, फिर भी बीच-बीच में उसकी आंख खुलती थी; लेकिन उसे ऊपर अंधेरा आकाश और आकाशगंगा ही दिखाई देती थी, और वो सोचता था कि अभी भी रात है, और उठने के लिए अभी जल्दी है.

नीकिया जाग गई और बाहर चली गई, लेकिन वो दरवाज़ा बंद करना भूल गई. नैना ने अपनी आंखें खोलीं और खुले दरवाजे के बाहर उज्ज्वल सुबह देखी. उसने भालू को नीले आकाश में सूर्य को खींचते हुए देखा. वो घर से बाहर भागा और उसने अपने भाइयों को बुलाया, लेकिन सूरज ने उसे देख लिया. सूरज ने गर्मी का एक झोंका भेजा और उसे जमीन पर गिरा दिया. नीकिया, नैना के पास दौड़ी और उसने अपने शरीर से उसे धूप से बचाया.

नैना उठा, वो एक पीली परछाई बन गया और आकाश में पिघल गया. लेकिन सूर्य ने नीकिया को उसकी चोटी से पकड़ लिया, उसे अपनी उग्र दृष्टि से जलाया और फिर अपने बेटे पेइवल्के को बुलाया. "तुम मुझे मार सकते हो, लेकिन मैं पेइवल्के से शादी नहीं करूंगी!" नीकिया ने रोते हुए कहा. तब सूर्य ने नीकिया को उसकी मां चंद्रमा की बाहों में फेंक दिया.

फिर मां चंद्रमा ने तुरंत अपनी बेटी को पकड़ लिया, और उसे अपने हृदय से लगाया. वो उसे आज भी उसे अपने पास रखती है. क्या तुम चांद के चेहरे पर उसकी बेटी के चेहरे की परछाई देख सकते हो? वो देख रही है, वो समुद्र के ऊपर की पीली पट्टी देख रही है, वो आकाश में उत्तरी लाइट्स की लड़ाई देख रही है, और वो वहां से अपनी आंखें नहीं हटा पाती है.